बड़ा सैलाब

baṛā sailāb

The Big Flood

(Urdu—Hindi script)

© 2022 Chashma Media.
published and printed by
Good Word Communication Services Pvt. Ltd.
New Delhi, INDIA

Bible text is from UGV.
illus.: R. Gunther (w.gunther.net.nz & www.lambsongs.co.nz) , R. Coate (www.basictraining.org)

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

लोगों की ज़्यादतियाँ

हज़रत आदम और हव्वा के दो बेटे थे : क़ाबील और हाबील। लेकिन क़ाबील ने हाबील को क़त्ल किया। आगे तौरेत शरीफ़ फ़रमाती है :

आदम और हव्वा का एक और बेटा पैदा हुआ। हव्वा ने उसका नाम सेत रखकर कहा, "अल्लाह ने मुझे हाबील की जगह जिसे क़ाबील ने क़त्ल किया एक और बेटा बख़्शा है।" सेत के हाँ भी बेटा पैदा हुआ। उसने उसका नाम अनूस रखा।

उन दिनों में लोग रब का नाम लेकर इबादत करने लगे।

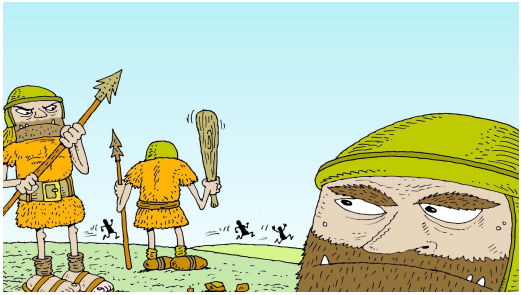

दुनिया में लोगों की तादाद बढ़ने लगी। रब ने देखा कि इनसान निहायत बिगड़ गया है, कि उसके तमाम ख़यालात लगातार बुराई की तरफ़ मायल रहते हैं। वह पछताया कि मैंने इनसान को बनाकर दुनिया में रख दिया है, और उसे सख़्त दुख हुआ। उसने कहा, "गो मैं ही ने इनसान को ख़लक़ किया मैं उसे रूए-ज़मीन पर से मिटा डालूँगा। मैं न

सिर्फ़ लोगों को बल्कि ज़मीन पर चलने-फिरने और रेंगनेवाले जानवरों और हवा के परिंदों को भी हलाक कर दूँगा, क्योंकि मैं पछताता हूँ कि मैंने उनको बनाया।”

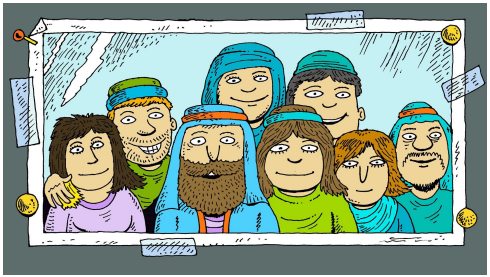

बड़े सैलाब के लिए नूह की तैयारियाँ

सिर्फ़ नूह पर रब की नज़रे-करम थी। यह उसकी ज़िंदगी का बयान है।

नूह रास्तबाज़ था। उस ज़माने के लोगों में सिर्फ़ वही बेक़ुसूरवार था। वह अल्लाह के साथ साथ चलता था। नूह के तीन बेटे थे, सिम, हाम और याफ़त।

लेकिन दुनिया अल्लाह की नज़र में बिगड़ी हुई और ज़ुल्मो-तशद्दुद से भरी हुई थी। जहाँ भी अल्लाह देखता दुनिया ख़राब थी, क्योंकि तमाम जानदारों ने ज़मीन पर अपनी रविश को बिगाड़ दिया था।

तब अल्लाह ने नूह से कहा, "मैंने तमाम जानदारों को ख़त्म करने का फ़ैसला किया है, क्योंकि उनके सबब से पूरी दुनिया ज़ुल्मो-तशद्दुद से भर गई है। चुनाँचे मैं उनको ज़मीन समेत तबाह कर दूँगा।

अब अपने लिए सरो की लकड़ी की कश्ती बना ले। उसमें कमरे हों और उसे अंदर और बाहर तारकोल लगा।

मैं पानी का इतना बड़ा सैलाब लाऊँगा कि वह ज़मीन के तमाम जानदारों को हलाक कर डालेगा। ज़मीन पर सब कुछ फ़ना हो जाएगा।

लेकिन तेरे साथ मैं अहद बाँधूँगा जिसके तहत तू अपने बेटों, अपनी बीवी और बहुओं के साथ कश्ती में जाएगा।

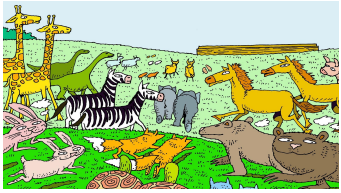

हर क़िस्म के जानवर का एक नर और एक मादा भी अपने साथ कश्ती में ले जाना ताकि वह तेरे साथ जीते बचें। हर क़िस्म के पर रखनेवाले जानवर और हर क़िस्म के ज़मीन पर फिरने या रेंगनेवाले जानवर दो दो होकर तेरे पास आएँगे ताकि जीते बच जाएँ।

जो भी ख़ुराक दरकार है उसे अपने और उनके लिए जमा करके कश्ती में महफ़ूज़ कर लेना।”

नूह ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा अल्लाह ने उसे बताया।

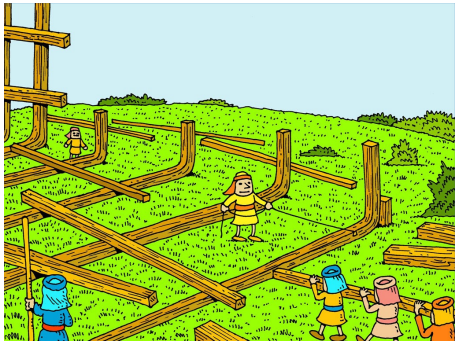

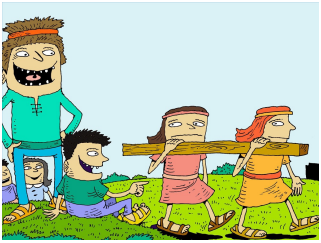

लोग हज़रत नूह का मज़ाक़ उड़ाते हैं। वह अल्लाह की नहीं सुनते।

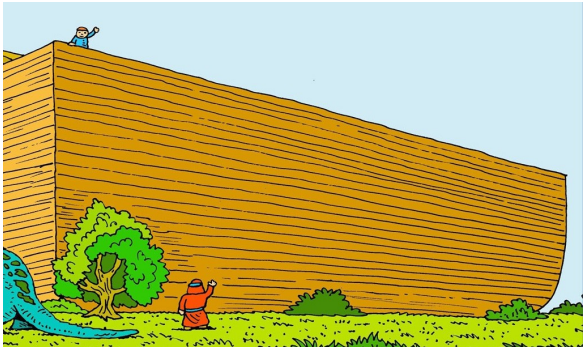

कश्ती तैयार है

सैलाब का आग़ाज़

फिर रब ने नूह से कहा, “अपने घराने समेत कश्ती में दाख़िल हो जा, क्योंकि इस दौर के लोगों में से मैंने सिर्फ़ तुझे रास्तबाज़ पाया है।

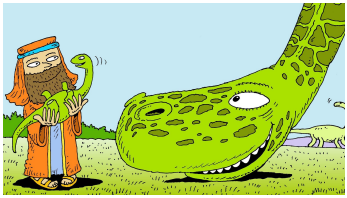

हर क़िस्म के पाक जानवरों में से सात सात नरो-मादा के जोड़े जबकि नापाक जानवरों में से नरो-मादा का सिर्फ़ एक एक जोड़ा साथ ले

जाना। इसी तरह हर क़िस्म के पर रखनेवालों में से सात सात नरो-मादा के जोड़े भी साथ ले जाना ताकि उनकी नसलें बची रहें। एक हफ़्ते के बाद मैं चालीस दिन और चालीस रात

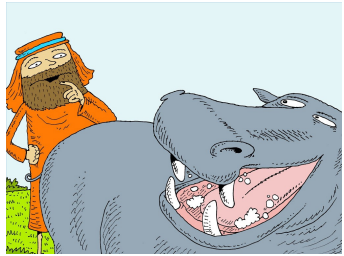

मुतवातिर बारिश बरसाऊँगा। इससे मैं तमाम जानदारों को रूए-ज़मीन पर से मिटा डालूँगा, अगरचे मैं ही ने उन्हें बनाया है।”

नूह ने वैसा ही किया जैसा रब ने हुक्म दिया था।

एक हफ़्ते के बाद तूफ़ानी सैलाब ज़मीन पर आ गया।

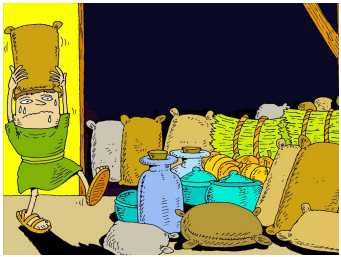

ज़मीन की गहराइयों में से तमाम चश्मे फूट निकले और आसमान पर पानी के दरीचे खुल गए। चालीस दिन और चालीस रात तक मूसलाधार बारिश होती रही। जब बारिश शुरू हुई तो नूह, उसके बेटे सिम, हाम और याफ़त, उसकी बीवी और बहुएँ कश्ती में सवार हो चुके थे।

उनके साथ हर क़िस्म के जंगली जानवर, मवेशी, रेंगने और पर रखनेवाले जानवर थे। हर क़िस्म के जानदार दो दो होकर नूह के पास

आकर कश्ती में सवार हो चुके थे। नरो-मादा आए थे। सब कुछ वैसा ही हुआ था जैसा अल्लाह ने नूह को हुक्म दिया था।

फिर रब ने दरवाज़े को बंद कर दिया।

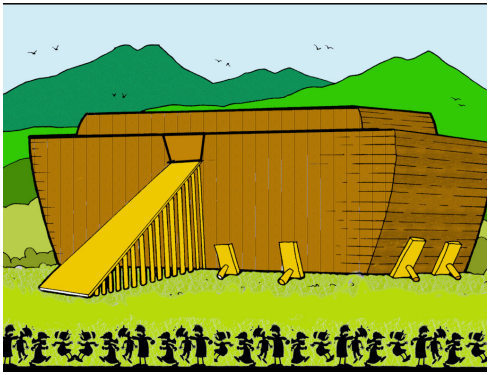

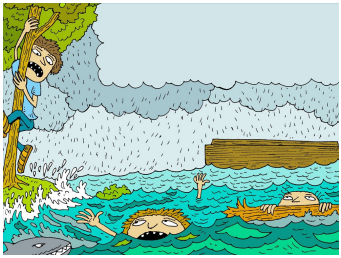

चालीस दिन तक तूफ़ानी सैलाब जारी रहा। पानी चढ़ा तो उसने कश्ती को ज़मीन पर से उठा लिया। पानी ज़ोर पकड़कर बहुत बढ़ गया, और कश्ती उस पर तैरने लगी। आख़िरकार पानी इतना ज़्यादा हो गया कि तमाम ऊँचे पहाड़ भी उसमें छिप गए, बल्कि सबसे ऊँची चोटी पर पानी की गहराई 20 फ़ुट थी।

ज़मीन पर रहनेवाली हर मख़लूक़ हलाक हुई। परिंदे, मवेशी, जंगली जानवर, तमाम जानदार जिनसे ज़मीन भरी हुई थी और इनसान, सब कुछ मर गया।

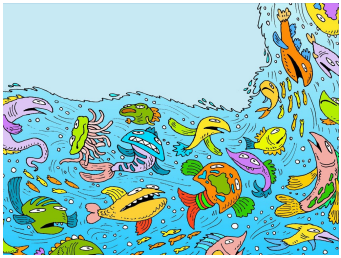

ज़मीन पर हर जानदार मख़लूक़ हलाक हुई। यों हर मख़लूक़ को रूए-ज़मीन पर से मिटा दिया गया। इनसान, ज़मीन पर फिरने और रेंगनेवाले जानवर और परिंदे, सब कुछ ख़त्म कर दिया गया। सिर्फ़ नूह और कश्ती में सवार उस के साथी बच गए।

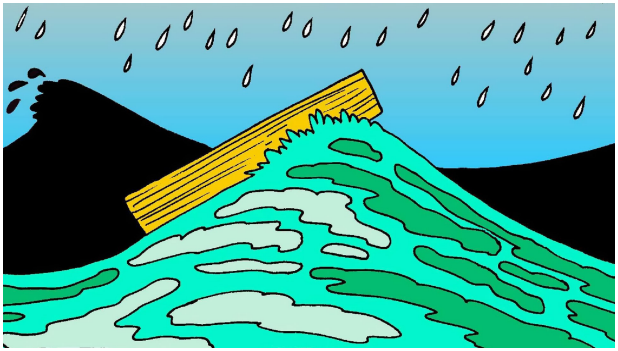

सैलाब का इख़्तिताम

लेकिन अल्लाह को नूह और तमाम जानवर याद रहे जो कश्ती में थे।

उसने हवा चला दी जिससे पानी कम होने लगा। ज़मीन के चश्मे और आसमान पर के पानी के दरीचे बंद हो गए, और बारिश रुक गई। पानी घटता गया। 150 दिन के बाद वह काफ़ी कम हो गया था। सातवें महीने के 17वें दिन कश्ती अरारात के एक पहाड़ पर टिक गई। दसवें महीने के पहले दिन पानी इतना कम हो गया था कि पहाड़ों की चोटियाँ नज़र आने लगी थीं।

चालीस दिन के बाद नूह ने कश्ती की खिड़की खोलकर एक कौवा छोड़ दिया, और वह उड़कर चला गया। लेकिन जब तक ज़मीन पर पानी था वह आता-जाता रहा।

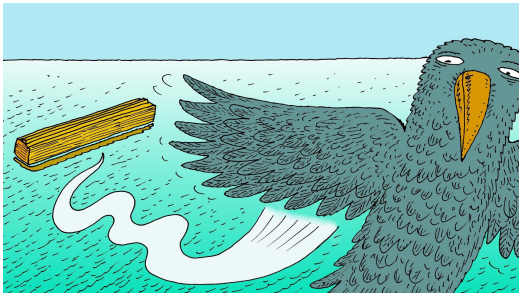

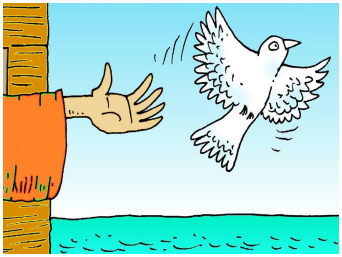

फिर नूह ने एक कबूतर छोड़ दिया ताकि पता चले कि ज़मीन पानी से निकल आई है या नहीं। लेकिन कबूतर को कहीं भी बैठने की जगह न मिली, क्योंकि अब तक पूरी ज़मीन पर पानी ही पानी था। वह कश्ती और नूह के पास वापस आ गया, और नूह ने अपना हाथ बढ़ाया और कबूतर को पकड़कर अपने पास कश्ती में रख लिया।

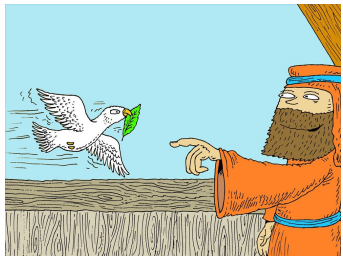

उसने एक हफ़्ता और इंतज़ार करके कबूतर को दुबारा छोड़ दिया। शाम के वक़्त वह लौट आया। इस दफ़ा उसकी चोंच में ज़ैतून का ताज़ा पत्ता था। तब नूह को मालूम

हुआ कि ज़मीन पानी से निकल आई है। उसने मज़ीद एक हफ़्ते के बाद कबूतर को छोड़ दिया। इस दफ़ा वह वापस न आया।

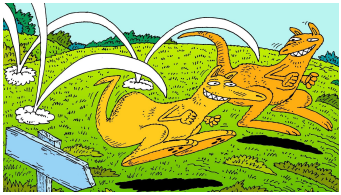

जब नूह 601 साल का था तो पहले महीने के पहले दिन ज़मीन की सतह पर पानी ख़त्म हो गया। तब नूह ने कश्ती की छत खोल दी और देखा कि ज़मीन की सतह पर पानी नहीं है। दूसरे महीने के 27वें दिन ज़मीन बिलकुल ख़ुश्क हो गई।

फिर अल्लाह ने नूह से कहा, "अपनी बीवी, बेटों और बहुओं के साथ कश्ती से निकल आ। जितने भी जानवर साथ हैं उन्हें निकाल दे, ख़्वाह परिंदे हों, ख़्वाह ज़मीन पर फिरने या रेंगनेवाले जानवर। वह दुनिया में फैल जाएँ, नसल बढ़ाएँ और तादाद में बढ़ते जाएँ।"

चुनाँचे नूह अपने बेटों, अपनी बीवी और बहुओं समेत निकल आया। तमाम जानवर और परिंदे भी अपनी अपनी क़िस्म के गुरोहों में कश्ती से निकले।

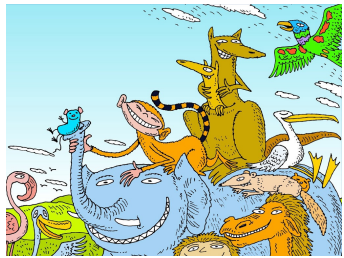

उस वक़्त नूह ने रब के लिए क़ुरबानगाह बनाई। उसने तमाम फिरने और उड़नेवाले पाक जानवरों में से कुछ चुनकर उन्हें ज़बह किया और क़ुरबानगाह पर पूरी तरह जला दिया। यह क़ुरबानियाँ देखकर रब ख़ुश हुआ और अपने दिल में कहा, "अब से मैं कभी ज़मीन पर इनसान की वजह से लानत नहीं भेजूँगा, क्योंकि उसका दिल बचपन ही से बुराई की तरफ़ मायल है। अब से मैं कभी इस तरह तमाम जान रखनेवाली मख़लूक़ात को रूए-ज़मीन पर से नहीं मिटाऊँगा।

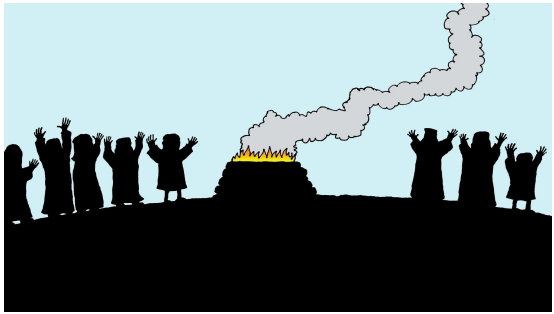

दुनिया के मुक़र्ररा औक़ात जारी रहेंगे। बीज बोने और फ़सल काटने का वक़्त, ठंड और तपिश, गरमियों और सर्दियों का मौसम, दिन और रात, यह सब कुछ दुनिया के अख़ीर तक क़ायम रहेगा।"

अल्लाह का नूह के साथ अहद

फिर अल्लाह ने नूह और उसके बेटों को बरकत देकर कहा, "फलो-फूलो और तादाद में बढ़ते जाओ। दुनिया तुमसे भर जाए। ज़मीन पर फिरने और रेंगनेवाले जानवर, परिंदे और मछलियाँ सब तुमसे डरेंगे। उन्हें तुम्हारे इख़्तियार में कर दिया गया है। जिस तरह मैंने तुम्हारे खाने के लिए पौधों की पैदावार मुक़र्रर की है उसी तरह अब से तुम्हें हर क़िस्म के जानवर खाने की इजाज़त भी है।

तब अल्लाह ने नूह और उसके बेटों से कहा, "अब मैं तुम्हारे और तुम्हारी औलाद के साथ अहद क़ायम करता हूँ। यह अहद उन तमाम जानवरों के साथ भी होगा जो कश्ती में से निकले हैं यानी परिंदों, मवेशियों और ज़मीन पर के तमाम जानवरों के साथ। मैं तुम्हारे साथ अहद बाँधकर वादा करता हूँ कि अब से ऐसा कभी नहीं होगा कि ज़मीन की तमाम ज़िंदगी सैलाब से ख़त्म कर दी जाएगी। अब से ऐसा सैलाब कभी नहीं आएगा जो पूरी ज़मीन को तबाह कर दे।

इस अबदी अहद का निशान जो मैं तुम्हारे और तमाम जानदारों के साथ क़ायम कर रहा हूँ यह है कि मैं अपनी कमान बादलों में रखता हूँ। वह मेरे दुनिया के साथ अहद का निशान होगा। जब कभी मेरे कहने पर

आसमान पर बादल छा जाएँगे और क़ौसे-क़ुज़ह उनमें से नज़र आएगी तो मैं यह अहद याद करूँगा जो तुम्हारे और तमाम जानदारों के साथ किया गया है। अब कभी भी ऐसा सैलाब नहीं आएगा जो तमाम ज़िंदगी को हलाक कर दे। क़ौसे-क़ुज़ह नज़र आएगी तो मैं उसे देखकर उस दायमी अहद को याद करूँगा जो मेरे और दुनिया की तमाम जानदार मख़लूक़ात के दरमियान है। यह उस अहद का निशान है जो मैंने दुनिया के तमाम जानदारों के साथ किया है।”

नूह के बेटे

नूह के जो बेटे उसके साथ कश्ती से निकले सिम, हाम और याफ़त थे। हाम कनान का बाप था। दुनिया-भर के तमाम लोग इन तीनों की औलाद हैं।

सवाल

- **जब हज़रत आदम और हव्वा को बाग़े-अदन से निकाला गया तो फिर क्या हुआ?**
  - ► हालात बेहतर न हुए बल्कि लोग बुरे कामों में जुट गए। उनकी सोच नीची और ख़राब रहती थी। तौरेत फ़रमाती है,

> रब ने देखा कि इनसान निहायत बिगड़ गया है, कि उसके तमाम ख़यालात लगातार बुराई की तरफ़ मायल रहते हैं। [...] जहाँ भी अल्लाह देखता दुनिया ख़राब थी, क्योंकि तमाम जानदारों ने ज़मीन पर अपनी रविश को बिगाड़ दिया था।
> (पैदाइश 6:5,12)

- **अल्लाह ने यह देखकर क्या महसूस किया?**
  - ► उसे बड़ा अफ़सोस और ग़म हुआ कि लोग इतने बुरे थे और इतना घटिया काम करते थे गो उसने उन्हें और सब कुछ शुरू में इतना अच्छा बनाया था।

> वह पछताया कि मैंने इनसान को बनाकर दुनिया में रख दिया है, और उसे सख़्त दुख हुआ।
> (पैदाइश 6:6)

अल्लाह बुरे काम और गुनाह से नफ़रत करता है, क्योंकि वह नेक और पाक है।

- **यह देखकर ख़ुदा को क्या करना था?**
  - ► लाज़िम था कि वह इन गुनाहों की सज़ा दे। यह सज़ा सैलाब की सूरत में आई। जिस तरह वह फ़रमाता है,

    > मैं तेरा रब ग़यूर ख़ुदा हूँ। जो मुझसे नफ़रत करते हैं उन्हें मैं [...] सज़ा दूँगा। (ख़ुरूज 20:5)

    लेकिन उसूली तौर पर वह नहीं चाहता कि कोई बरबाद हो जाए। वह हर एक की ज़िंदगी क़ायम रखना चाहता है। जो तौबा करके सीरते-मुस्तक़ीम पर चल पड़े उसे वह छुटकारे का रास्ता मुहैया करता है।

    > जो मुझसे मुहब्बत रखते और मेरे अहकाम पूरे करते हैं उन पर मैं हज़ार पुश्तों तक मेहरबानी करूँगा। (ख़ुरूज 20:6)

- **क्या जो कुछ हमने पढ़ा उसमें किसी ऐसे शख़्स का ज़िक्र है जिसके लिए अल्लाह ने बचने का रास्ता तैयार किया?**
  - ► ज़रूर। हज़रत नूह के बारे में लिखा है कि वह ख़ुदा के साथ चलता था, इसलिए अल्लाह ने उसे और उसके ख़ानदान के लिए नजात का रास्ता खोल दिया। उसने मुख़्तलिफ़ क़िस्म के जानवरों को बचाने का मनसूबा भी बनाया।

- **हज़रत नूह को ख़ानदान समेत क्यों छुटकारा मिला?**
  - ► हज़रत नूह ने अल्लाह पर भरोसा किया। जब अल्लाह ने उसे कश्ती बनाने का मनसूबा बताया तो उसने उसकी सुनकर कश्ती बनाई।

    इंजील जलील में लिखा है कि उसने ख़ुदा पर भरोसा रखा। उसने कश्ती उस वक़्त बनाया जब बारिश बिलकुल नहीं होती थी। लोगों को न बारिश और न ही सैलाब का इल्म था। ख़ुदा को हज़रत नूह का यह पक्का ईमान पसंद था इसलिए उसने उसे रास्तबाज़ क़रार दिया। लिखा है,

    > यह ईमान का काम था कि नूह ने अल्लाह की सुनी जब उसने उसे आनेवाली बातों के बारे में आगाह किया, ऐसी बातों के बारे में जो अभी देखने में नहीं आई थीं। नूह ने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानकर एक कश्ती बनाई ताकि उसका ख़ानदान बच जाए। यों उसने अपने ईमान के ज़रीए दुनिया को मुजरिम क़रार दिया और उस रास्तबाज़ी का वारिस बन गया जो ईमान से हासिल होती है। (इबरानियों 11:7)

- **क्या अल्लाह ने वह कुछ पूरा किया जो उसने फ़रमाया था?**
  - ► ज़रूर। ख़ुदा हमेशा वह कुछ पूरा करता है जिसका वादा उसने किया है। उसने फ़रमाया कि हज़रत नूह ख़ानदान और जानवरों

समेत बचेंगे और ऐसा ही हुआ। आज भी वह अपने वादे पूरे करता है। यों लिखा है,

> अल्लाह आदमी नहीं जो झूठ बोलता है। वह इनसान नहीं जो कोई फ़ैसला करके बाद में पछताए। क्या वह कभी अपनी बात पर अमल नहीं करता? क्या वह कभी अपनी बात पूरी नहीं करता? (गिनती 23:19)

- **नूह के छुटकारे के अलावा ख़ुदा ने क्या वादा किया?**
  - ► उसने फ़रमाया कि मैं आइंदा होने नहीं दूँगा कि ज़मीन इस तरह तबाह हो जाए। हमें याद दिलाने के लिए उसने कमान यानी क़ौसे-क़ुज़ह का निशान क़ायम किया।
    जब कभी हम इसे देखते हैं तो यह हमें याद दिलाती है कि ख़ुदा वफ़ादार है और अपने वादों पर पूरा उतरता है।
- **हज़रत नूह बचने के बाद क्या करता है?**
  - ► वह एक क़ुरबानगाह बनाकर अल्लाह को क़ुरबानियाँ पेश करता है। इससे वह अपनी शुक्रगुज़ारी का इज़हार करता है।
- **हज़रत नूह के बाद लोग कैसे रहे? क्या उस वक़्त से तमाम लोग शरीफ़ और अच्छे हैं? क्या उस वक़्त से वह बुरे ख़यालात नहीं रखते और बुरे काम नहीं करते? क्या अल्लाह ने फ़रमाया कि अब तमाम ख़राब लोग ख़त्म हैं, अब से सब कुछ ठीक रहेगा?**

► अफ़सोस कि ऐसा नहीं था। उसे मालूम था कि बुराई इनसान की रगो-रेशे में दौड़ रही है। यों लिखा है,

> उसका दिल बचपन ही से बुराई की तरफ़ मायल है। (पैदाइश 8:21)

► फिर भी वह फ़रमाता है कि वह ज़मीन को इसी तरह कभी भी बरबाद नहीं करेगा। अल्लाह हमें बरबाद नहीं करना चाहता। गो हम इस लायक़ नहीं वह अपना हमारे साथ रिश्ता बहाल रखना चाहता है। यों लिखा है,

> रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि क्या मैं बेदीन की हलाकत देखकर ख़ुश होता हूँ? हरगिज़ नहीं, बल्कि मैं चाहता हूँ कि वह अपनी बुरी राहों को छोड़कर ज़िंदा रहे। (हिज़क़ियेल 18:23)

और क़ौसे-क़ुज़ह से वह अपने वादे की याद दिलाता रहता है। जब कभी यह नज़र आए हमें ख़ुदा का शुक्र करना चाहिए कि वह वफ़ादार है।

- **हम सब कैसे हैं? क्या हम ख़ुदा जैसे अच्छे-भले और पाक हैं? क्या हमसे गुनाह सरज़द नहीं होते?**

► हरगिज़ नहीं। लिखा है,

> सबने गुनाह किया, सब अल्लाह के उस जलाल से महरूम हैं जिसका वह तक़ाज़ा करता है।
> (रोमियों 3:23)

फिर भी यह भी लिखा है,

> ऐ रब, तुझ जैसा ख़ुदा कहाँ है? तू ही गुनाहों को माफ़ कर देता, तू ही अपनी मीरास के बचे हुओं के जरायम से दरगुज़र करता है। तू हमेशा तक ग़ुस्से नहीं रहता बल्कि शफ़क़त पसंद करता है।
> (मीका 7:18)

अल्लाह ने हमारे लिए भी बचने का रास्ता, हाँ एक तरह की कश्ती तैयार कर रखी है। वह फ़रमाता है,

> ताहम मैं, हाँ मैं ही अपनी ख़ातिर तेरे जरायम को मिटा देता और तेरे गुनाहों को ज़हन से निकाल देता हूँ। (यसायाह 43:25)
> मैं उनका क़ुसूर माफ़ करूँगा और आइंदा उनके गुनाहों को याद नहीं करूँगा। (यरमियाह 31:34)

जब भी कोई इस ख़ुदा पर भरोसा रखकर अपने गुनाहों को तसलीम करे तब आसमान के तमाम फ़रिश्ते ख़ुशी मनाते हैं। यों लिखा है,

> मैं तुमको बताता हूँ कि बिलकुल इसी तरह अल्लाह के फ़रिश्तों के सामने ख़ुशी मनाई जाती है जब एक भी गुनाहगार तौबा करता है। (लूक़ा 15:10)

जो तौरेत में तफ़सील से नूह और सैलाब के बारे में पढ़ना चाहे, वह पैदाइश 6:5–9:19 में पढ़े।